This question paper contains **4+2** printed pages]

Roll No. | | | | | | | | | | | | |

S. No. of Question Paper : **1912**

Unique Paper Code : **213481** **D**

Name of the Paper : **Sanskrit Literature : Text and Grammar**

Name of the Course : **Sanskrit [Discipline Centered Course for B.A. (Hons.)]**

Semester : **IV**

Duration : **3 Hours** Maximum Marks : **75**

(Write your Roll No. on the top immediately on receipt of this question paper.)

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।)

Note : Unless otherwise required in a question, answers should be written in Sanskrit *or* in Hindi *or* in English; but the same medium should be used throughout the paper.

टिप्पणी : अन्यथा आवश्यक न होने पर इस प्रश्न-पत्र का उत्तर संस्कृत **या** हिन्दी **या** अंग्रेजी किसी एक भाषा में दीजिये, लेकिन सभी उत्तरों का माध्यम एक ही होना चाहिए।

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

All questions are compulsory.

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** का अनुवाद कीजिए : 4×2=8

Translate any *two* of the following :

(*i*) देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति॥

P.T.O.

(*ii*) नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।

न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

(*iii*) नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।

स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्॥

(*iv*) या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।

यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः॥

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×6=12

Explain any *two* of the following with reference to the conext :

(*i*) नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।

उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः॥

(*ii*) हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।

तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः॥

(*iii*) योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनञ्जय।

सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।

(*iv*) तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।

वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥

3. गीता के द्वितीय अध्याय के अनुसार आत्मा के स्वरूप पर प्रकाश डालिए। 10

Describe the आत्मा on the basis of IInd chapter of Gita.

अथवा

(Or)

गीता के द्वितीय अध्याय के अनुसार 'स्थितप्रज्ञ' के लक्षणों का निरूपण कीजिए।

Describe the features of 'स्थितप्रज्ञ' according to the second chapter of the Gita.

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** का अनुवाद कीजिये : 2×4=8

Translate any *two* of the following :

(*i*) पूर्वं त्वयाप्यभिमतं गतमेवमासी

च्छ्लाघ्यं गमिष्यसि पुनर्विजयेन भर्तुः।

क़ालक्रमेण जगतः परिवर्तमाना

चक्रारपङ्क्तिरिव गच्छति भाग्यपङ्क्तिः॥

(*ii*) कार्यं नैवार्थैर्नापि भोगैर्न वस्त्रै

नार्हं काषायं वृत्तिहेतोः प्रपन्नः।

धीरा कन्येयं दृष्टधर्मप्रचारा

शक्ता चारित्रं रक्षितुं मे भगिन्याः॥

(*iii*) दुःखं त्यक्तुं बद्धमूलोऽनुरागः

स्मृत्वा स्मृत्वा याति दुःखं नवत्वम्।

यात्रा त्वेषा यद् विमुच्येह बाष्पं

प्राप्तानृण्या याति बुद्धिः प्रसादम्॥

(*iv*) रूपश्रिया समुदितां गुणतश्च युक्तां

लब्ध्वा प्रियां मम तु मन्द इवाद्य शोकः।

पूर्वाभिघातसरुजोऽप्यनुभूतदुःखः

पद्मावतीमपि तथैव समर्थयामि॥

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 2×6=12

Explain any *two* of the following with reference to the context :

(*i*) प्रद्वेषो बहुमानो वा संकल्पादुपजायते।

भर्तृदाराभिलाषित्वादस्यां मे महती स्वता॥

(*ii*) सविश्रमो ह्ययं भारः प्रसक्तस्तस्य तु श्रमः।

तस्मिन् सर्वमधीनं हि यत्राधीनो नराधिपः॥

(*iii*) पद्मावती बहुमता मम यद्यपि रूपशीलमाधुर्यैः।

वासवदत्ताबद्धं न तु तावन्मे मनो हरति॥

(*iv*) यदि तावदयं स्वप्नो धन्यमप्रतिबोधनम्।

अथायं विभ्रमो वा स्याद्विभ्रमो ह्यस्तु मे चिरम्॥

6. 'स्वप्नवासवदत्तम्' नाटक के पञ्चम अंक का महत्त्व लिखिए। 10

Write the importance of the fifth act of 'स्वप्नवासवदत्तम्'.

अथवा

(Or)

'स्वप्नवासवदत्तम्' के आधार पर वासवदत्ता का चरित्र-चित्रण कीजिए।

Sketch the character of वासवदत्ता as depicted in 'स्वप्नवासदवदत्तम्'.

7. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** का सन्धि-विच्छेद कीजिए : 3×2½=7½

Disjoin Sandhi in any *three* of the following :

नैनम्, उभयोरपि, पङ्क्तिरिव, ह्ययम्, नासतः, तीर्थोदकानि।

8. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** रेखाङ्कित शब्दों में विभक्ति निर्देश कीजिए : $3 \times 2\frac{1}{2} = 7\frac{1}{2}$

Name the case ending in any *three* of the following :

(*i*) या निशा <u>सर्वभूतानाम्</u>।

(*ii*) <u>युद्धाय</u> कृतनिश्चयः।

(*iii*) कार्यं नैव <u>अर्थैः</u>।

(*iv*) <u>तस्मिन्</u> सर्वमधीनम्।

(*v*) मे <u>मनः</u> हरति।

(*vi*) स्वल्पम् अपि <u>अस्य</u>।